□□□□□□□□□

जनसत्ता 18 अगस्त, 2014 : अगर भारत उर्फ इंडिया में रहने वाले सभी लोग हिंदुस्तानी हैं, तो मैं भी हिंदुस्तानी हूं।

लेकिन हिंदुस्तान और हिंदू के बीच दूर का रिश्ता है। बल्कि दोनों दो अलग-अलग चीजें हैं। इनमें घालमेल वही करेगा, जो अपने को सिर्फ हिंदू मानता है, यानी हिंदुस्तानी नहीं मानता। इस आधार पर किसी और को उपदेश देना कि तुम भी हिंदू हो, उसका मूर्खतापूर्ण अपमान करना है। कम से कम उसे यह चुनने का अधिकार तो दीजिए कि उसे किस नाम से जाना जाय। अगर दुनिया के सभी लोग एक-दूसरे का या एक-दूसरे के राष्ट्र का नाम तय करने लगें, तो किसी भी नाम का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा।

कुछ तर्क हमेशा बेहूदा होते हैं। सभी के हिंदू होने का यह साठ-सत्तर साल पुराना तर्क भी ऐसा ही है। निश्चय ही आज से दो-ढाई हजार वर्ष पहले जब सभी को हिंदू कहा गया, तो इसका अर्थ वह नहीं था, जो आज हो गया है। जर्मनी में रहने वाले जर्मन कहलाते हैं, इंग्लैंड में रहने वाले इंग्लिश और अमेरिका में रहने वाले अमेरिकी, वैसे ही हिंदुस्तान में रहने वाले हिंदू, यह बात डेढ़-दो हजार साल पहले कही जाती, तब इसका औचित्य था। यह वह समय था जब उपर्युक्त तीनों राष्ट्र अपने आधुनिक रूप में नहीं थे। अमेरिका था, पर वह वहां के मूल बाशिंदों का था। उन्होंने अपना या अपने देश का कोई नाम नहीं रखा था। इनमें अमेरिका की कहानी सबसे दिलचस्प है।

इस मान्यता में कोई दम नहीं है कि अमेरिका, या कहिए अमेरिकाओं (उत्तर अमेरिका और दक्षिण अमेरिका) का आविष्कार कोलंबस ने किया था। उसके पहले कई और दुस्साहसी यात्री वहां पहुंच चुके थे। इन्हीं में एक कथा अमेरिगो वेसपुच्चि (1454-1512) की। कोलंबस (1450 या 1451 से 1506) की तरह वह भी इटली का था। अमेरिका का नाम उसी के नाम पर रखा गया। अमेरिगो लैटिन में आकर अमेरिकस हो गया, जिससे अमेरिका शब्द बना। कोलंबस की ऐतिहासिक भूमिका यह थी कि उसने यूरोपीय लोगों को अमेरिका के बारे में और वहां तक पहुंचने का समुद्री मार्ग बताया। यह अमेरिका के मूल निवासियों की सबसे बड़ी त्रासदी थी। यूरोपीय लोगों ने उनकी जमीन छीनने और उन्हें दास बना कर उनसे मजदूरी कराने का नृशंस काम किया।

अमेरिका के मूल निवासियों ने भी अपना या अपने वतन का कोई नाम नहीं रखा था। वे छोटी-छोटी बस्तियों में रहते थे और यह नहीं जानते थे कि देश या राष्ट्र क्या होता है, सरकार क्या होती है, संविधान किसे कहते हैं। उसी तरह, हम हिंदुस्तानियों ने भी अपना कोई नाम नहीं रखा था। यद्यपि वैदिक संस्कृति अमेरिकाओं की मूल संस्कृति से काफी विकसित थी, पर हम भी नहीं जानते थे कि एक समूह के तौर पर हम कौन हैं या हमारा नाम क्या है। दो शब्द जरूर प्रचलित थे- आर्य और असुर। ऐसा लगता है कि आर्यों ने अपना नामकरण इस आधार पर किया होगा कि वे भारत के मूल निवासियों के अरि (शत्रु) थे। बेहतर जमीन और जलवायु की तलाश में उन्होंने हिमालय पार किया और यहां के लोगों का कहीं संहार कर और कहीं उनसे समझौता कर यहीं बस गए।

आर्यों ने जब लगभग पूरे उत्तर भारत पर कब्जा कर लिया, तब इस इलाके का नाम आर्यावर्त रख दिया। दक्षिण भारत पर उनका कब्जा नहीं था। बीच

में वधि्याचल का पहा□ था□ आर्यावर्त के लोग सुखी-संपन्न थे, क्योंकि उनका इलाका अच्छा था□ जमीन उर्वर थी, फल-फूलों की भरमार थी, तरह-तरह के पशु जंगलों में वचिरण करते थे□ दक्षणि की जलवायु गरम थी और यह नशि्चति नहीं था कि वहां जाने पर क्या मलिेगा□ इसके अलावा, वह जमाना साम्राज्यवाद का नहीं था□ लोग लालच से नहीं, जरूरत से कहीं और के लि□ कूच करते थे□

जनि्हें और ज्यादा समृद्धि की कामना होती थी, वे पहा□ी रास्ते से हमिालय के उस पार जाते थे या लंबी-लंबी समुद्र यात्रा□ं करते थे, जसिकी प्रतध्विनि सत्यनारायण की कथा में सुनाई प□ी है□ यह कथा बहुत पुरानी नहीं है- शायद सौ वर्ष भी पुरानी नहीं, पर जसिने भी यह कथा लखिी होगी, उसके ध्यान में प्राचीन भारत की समुद्र यात्राओं की स्मृति जरूर रही होगी□ कल्पना के साथ सत्य का रशि्ता सहोदर का है□ शपि शब्द बना, उसके पहले ही पोत शब्द बन चुका था, जो अंगरेजी के पोर्ट शब्द का जनक रहा होगा□

आर्य जब आर्य नहीं रह ग□, अपने को आर्यों का वंशज कहने लगे, तब □क ऐसा शब्द- हदि, हदिी, हदिू या हदिवी- प्रचलन में आया, जो आज □क नरिर्थक ववािद का वषिय बना हुआ है□ इसमें दरअसल ववािद की कोई बात नहीं है, लेकनि जनि्हें दनि में भूत दखिाई प□ता है, उनके लि□ कुतर्क ही तर्क है□ बच्चे भी जानते हैं कि सधिु नदी ही हदिु या हदिू नामकरण का कारण बनी□ यह नदी भारत के उत्तर-पश्चमि में बहती है□ हमारी नदयिों के नाम कतिने पुराने हैं! ईरान के लोगों ने सधिु को हदिु बना दयिा, जो □क भौगोलकि संज्ञा थी□ पता नहीं यह कब हुआ कि हमने अपने भौगोलकि नाम को ही अपनी धार्मकि पहचान के रूप में बदल दयिा□

जब तक कोई वदिेशी जत्था भारत नहीं आया था, तब तक हमने अपने को हदिू कहना शुरू नहीं कयिा था□ जरूरत ही नहीं थी□ वैदकि धर्म को मानने वाले थे; बौद्ध, जैन, चार्वाक थे- ये सभी परंपरागत अर्थ में हदिू थे, पर इनमें से कोई उस अर्थ में हदिू नहीं था, जसि अर्थ में आज लगभग □क अरब की आबादी अपने को हदिू कहती है□ बुद्ध और महावीर ने हदिू धर्म से नहीं, वैदकि धर्म से वद्रिोह कयिा था, जसिे मानने वाले जाति प्रथा के अनुयायी, स्वर्ग और नरक में वशि्वास करने वाले, देव पूजक और मांसाहारी थे□ इन दोनों ही धर्मों ने, बाद में सखि धर्म और आर्य समाज ने भी, समानता पर जोर दयिा, जबकि हदिू धर्म में वषिमता के कई स्तर हैं, जनिके वरिुद्ध भारत के सवर्ण समाज ने अभी तक कोई बगावत नहीं की है□

वैदकि धर्म के बारे में सही-सही कहा जा सकता है कि वह धर्म नहीं था, संस्कृति थी, जसिे जीवन पद्धति भी कहा जा सकता है□ वास्तव में सभी पुरानी संस्कृतयिों को संस्कृति या सभ्यता ही कहा जाता है, जैसे चीन की सभ्यता, ईरान की सभ्यता, सधिु (हदिु) घाटी की सभ्यता, □जटेक और मया सभ्यता□ इन सभी में धार्मकि गतवििधियिां होती थीं, देवी-देवता भी थे, पर कोई धर्म नहीं था, जैसे यहूदी धर्म, हदिू धर्म, इस्लाम, ईसाइयत आदि□ स्पष्ट है कि सभ्यता पहले आई, धर्म बाद में□ वास्तव में धर्मों का उदय सभ्यता का पतन था□ सभ्यता सभ्य बनाती है, पर धर्म सभ्य नहीं, कसिी खास वशि्वास प्रणाली का अनुयायी बनाता है□

जब बौद्ध और जैन धर्म प्रगट हु□, तब जनि लोगों ने इनमें से कसिी भी धर्म को नहीं अपनाया, वे अपने को सनातनी या सनातन धर्मी कहने लगे□ जब इस्लाम शासक के रूप में भारत आया, तब यही सनातन धर्म हदिू धर्म में बदल गया□ मुसलमान हमें हदिू कहने लगे, तब हमने भी अपने आप को हदिू मान लयिा□ हम वैदकि धर्म को भूल ग□, उपनषिदों के चतिंन को भूल ग□, यहां तक कि स्मृतयिों और पुराणों को भी भूल ग□ और हदिू बन बैठे□ मैं इसे भारतीय सभ्यता का पतन मानता हूं□

हमारे पूर्वज अगर सनातनी या सनातनधर्मी बने रहते, तो वे सभ्यता को आगे ब□ा सकते थे□ वे कह सकते थे कि हम न आर्य हैं न अनार्य, हम तो मनु की संतान यानी मानव हैं और हमारी पहचान जाननी हो तो हमें मनुस्मृति में बता□ ग□ धर्म के दस लक्षणों की कसौटी पर कसो□ यह वह मौका था, जब

समूह के बरक्स व्यक्ति को मान्यता दी जा सकती थी, क्योंकि धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इंद्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध- ये दस गुण व्यक्ति में ही हो सकते हैं, समूह में नहीं।

धर्म के आधार पर बने समाजों ने व्यक्ति की इयत्ता खत्म कर दी है, लेकिन सनातन धर्म हर आदमी को अनुमति देता है कि वह खुद तय करे कि उसका चरित्र क्या होगा। तब समाज का विभाजन इस आधार पर किया जाता- धृतिवान-धृतिहीन, क्षमा करने वाला-क्षमा न करने वाला, विद्वान और अज्ञानी, सत्यवादी और सत्य की अवहेलना करने वाला आदि। हालांकि आदमियों का तुलनात्मक मूल्यांकन करना गंदी आदत है, फिर भी आज इन दस गुणों के आधार पर हम किसी भी व्यक्ति का मूल्यांकन कर सकते हैं। जहां तक समुदाय का सवाल है, किसी भी समुदाय के सभी सदस्यों में इनमें से कोई एक गुण भी नहीं पाया जाता।

समय की मांग के अनुसार धर्म के इन दस लक्षणों की सूची को बढ़ाया भी जा सकता है और इसके आधार पर विभाजन भी किया जा सकता है: जैसे सांप्रदायिक-असांप्रदायिक, जाति प्रथा को बरतने वाला-जाति प्रथा को न बरतने वाला, मानव अधिकारों को मानने वाला-मानव अधिकारों को न मानने वाला, स्त्रियों को सम्मान देने वाला-स्त्रियों को सम्मान न देना वाला, समतावादी-विषमतावादी आदि। सनातन धर्म को अपनी उदारता और मानवीयता में किसी भी प्रतिष्ठानित धर्म से आगे रहना चाहिए। यह धर्म ऐसा है कि कोई मुसलमान, सिख, ईसाई या पारसी भी कह सकता है कि हां, हम मानवता के इन लक्षणों को बड़े आदर से स्वीकार करते हैं और अपने सहधर्मियों को प्रेरित करेंगे कि वे इन्हें अपनाएं। दरअसल, दुनिया के सभी धर्मों में इन गुणों को आदर का स्थान दिया गया है। इस स्तर पर सनातन धर्म विश्व धर्म है।

धर्म की इतनी विशद भूमिका के कुछ वंशज अगर हिंदुस्तान के सभी लोगों पर जोर दे रहे हैं कि वे अपने को हिंदू कहें, तो ताज्जुब होता है कि ये हिंदू धर्म और हिंदुस्तान का इतिहास थोड़ा-बहुत जानते भी हैं या नहीं। धर्म की किसी भी भारतीय परिभाषा के अनुसार या तो कोई हिंदू नहीं है या दुनिया के सभी लोग हिंदू हैं। जहां तक अमेरिका-अमेरिकी, जर्मनी-जर्मन का संबंध है, तो दसवीं का विद्यार्थी भी बता सकता है कि जर्मन, अमेरिकी, इंग्लिश या फ्रेंच- ये भौगोलिक नाम हैं, धार्मिक नहीं। जर्मन या अमेरिकन नाम का कोई धर्म नहीं है, देश हैं। हिंदी भौगोलिक नाम है और हिंदू रीलिजन की तर्ज पर धर्म। इक्बाल की पंक्ति याद कीजिए- हिंदी है हम, वतन है हिंदोस्तां हमारा। नेताजी को याद कीजिए- जय हिंद। कोई कहता है कि अपने को हिंदी या हिंदवी कहो, तो न हंसी आएगी न गुस्सा। पर हिंदू कहने पर जोर देना हिंदू होने को सीमित कर देना है। धर्म को धर्म के दस लक्षणों से जोड़ने वालों को सलाम है; ये लक्षण धर्म के नहीं, मानवता के हैं। इन्हें हिंदू समाज तक सीमित रखने वाले मनुष्य-विरोधी हैं, इन्हें सुधारगृह में भेजना चाहिए।

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta